राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचारपत्र

संकल्प शक्ति

संकल्प शक्ति के बल पर आओ हम सब मिलकर भय-भूख-भ्रष्टाचार से मुक्त भारत का निर्माण करें।

पृष्ठ-8, मूल्य ₹5

डाक पंजीकरण संख्या MP/SDLDn/0025/2023-2025

www.sankalpshakti.com | गुरुवार 02 मई से 08 मई 2024 | वर्ष 15, अंक : 14

कम मतदान से भाजपा-कांग्रेस चिंतित, जबकि भारतीय शक्ति चेतना पार्टी का प्रचार अपनी गति पर

संकल्प शक्ति। लोकसभा चुनाव के दो चरणों में मध्यप्रदेश की 12 लोकसभा सीटों पर कम मतदान होने से चिंतित भारतीय जनता पार्टी ने अपनी रणनीति में बदलाव लाते हुए गतदिवस पार्टी प्रमुखों के साथ मंत्रियों और विधायकों की बैठक की और अपने-अपने क्षेत्रों में मतदाताओं को घर से निकालने की ज़िम्मेदारी सौंपी है। वहीं कांग्रेस ने अपनी पार्टी के नेताओं को बूथस्तर पर सक्रिय कर दिया है, जबकि कई क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज़ कराते हुए भारतीय शक्ति चेतना पार्टी के नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान् और समाजसेवी कार्यकर्ता प्रचार-प्रसार में किसी से पीछे नहीं हैं और वे घर-घर जाकर मतदाताओं से सम्पर्क कर रहे हैं।

कहाँ-कहाँ हो चुका है मतदान?

मध्यप्रदेश में सीधी, शहडोल, जबलपुर, मंडला, बालाघाट, छिंदवाड़ा, टीकमगढ़, दमोह, खजुराहो, सतना, रीवा और होशंगाबाद संसदीय क्षेत्र में मतदान हो चुका है। 2019 की तुलना में पहले चरण की सीटों पर 7.48 और दूसरे चरण में 9.6 प्रतिशत मतदान कम रहा।

चुनाव आयोग भी चिंतित

कम मतदान को लेकर चुनाव आयोग भी चिंतित है। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कलेक्टरों के साथ बैठक पर बैठक कर रहे हैं। तीसरे और चौथे चरण में जिन 17 लोकसभा क्षेत्रों में चुनाव होना हैं, उनमें 'चलें बूथ की ओर अभियान' चलाने का निर्णय लिया गया है। एक मई को बैतूल, मुरैना, भिंड, ग्वालियर, गुना, सागर, विदिशा, भोपाल और राजगढ़ लोकसभा क्षेत्र के 20 हज़ार 456 मतदान केंद्रों पर यह अभियान चलाया जाएगा।

वहीं, सात मई को चौथे चरण के देवास, उज्जैन, मंदसौर, रतलाम, धार, इंदौर, खरगोन, खंडवा लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले 18,007 मतदान केंद्रों पर यह अभियान चलेगा। इसमें मतदाता जागरूकता दल प्रत्येक मतदान केंद्र पर पहुंचकर मतदान में भाग लेने के लिए मतदाताओं को प्रेरित करने का काम करेंगे।

भारतीय ब्रांड मसालों पर हांगकांग और सिंगापुर ने लगाई रोक, अमेरिका भी हुआ सतर्क

संकल्प शक्ति। भारतीय ब्रांडों एमडीएच और एवरेस्ट के मसालों में कथित तौर पर कीटनाशक पाए जाने के मामले में अमेरिका भी जानकारी जुटा रहा है। हांगकांग के खाद्य नियामक सेंटर फार फूड सेफ्टी (सीएफएस) ने विगत दिनों कहा था कि इन मसालों में कीटनाशक, एथिलीन आक्साइड पाया गया, जिससे कैंसर होने का ख़तरा होता है। अमेरिका के फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (एफडीए) के प्रवक्ता ने शुक्रवार को कहा कि वह एफडीए रिपोर्टों से अवगत है और इस बारे में अतिरिक्त जानकारी जुटा रहे हैं।

इस बात की भी चर्चा है कि हांगकांग के सीएफएस ने उपभोक्ताओं से इन उत्पादों को न खरीदने को कहा है, जबकि सिंगापुर की खाद्य एजेंसी ने ऐसे मसालों को वापस लेने का निर्देश दिया है।

इस मामले में एमडीएच और एवरेस्ट ने टिप्पणी नहीं की है, हालांकि एवरेस्ट ने पहले कहा था कि चिंता की कोई बात नहीं है। उसके उत्पाद सुरक्षित हैं। भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआइ) भी मसालों की गुणवत्ता की जांच कर रहा है।

भारत ने सिंगापुर और हांगकांग के खाद्य सुरक्षा नियामकों से विवरण मांगा है। वाणिज्य मंत्रालय ने सिंगापुर और हांगकांग में भारतीय दूतावासों को इस मामले पर विस्तृत रिपोर्ट भेजने का भी निर्देश दिया है।

एक साल में सामने आए मेडिकल लापरवाही के 52 लाख मामले

नई दिल्ली। हमारे देश में स्थित अस्पतालों और देखभाल के अन्य केंद्रों पर नित्यप्रति मरीजों के साथ दुर्व्यव्हार और चिकित्सीय लापरवाही परिलक्षित हैं। नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन के नवीनतम शोध के अनुसार, भारत में एक साल में मेडिकल लापरवाही के 52 लाख मामले सामने आए हैं। इतना ही नहीं, एक साल में मेडिकल मुकदमेबाजी के मामलों में 400 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है। इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल एथिक्स के अध्ययन से पता चलता है कि केवल 46 प्रतिशत अस्पतालों या देखभाल केंद्रों में ही नैतिक दिशानिर्देशों का पालन किया जाता है।

अध्ययन में कहा गया है कि मेडिकल लापरवाही के कारण होने वालीं 80 प्रतिशत मौतें सर्जिकल गलतियों से होती हैं, जबकि आपातकालीन सेवाओं में होने वालीं 70 प्रतिशत मौतें कुप्रबंधन से होती हैं। गौरतलब है कि मेडिकल लापरवाही किसी भी मेडिकल प्रोफेशनल्स की लापरवाही को इंगित करता है।

पंजाब में स्थिति अधिक खराब

नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन के आंकड़ों के अनुसार, मेडिकल लापरवाही की सबसे अधिक शिकायतें पंजाब में 24 प्रतिशत, पश्चिम बंगाल में 17 प्रतिशत, महाराष्ट्र में 16 प्रतिशत और तमिलनाडु में 11 प्रतिशत दर्ज़ की गई हैं। अध्ययन में यह पाया गया है कि सर्जिकल प्रक्रियाओं में ज़रूरी नहीं कि अक्षमता या अज्ञानता से मरीज की मौत हो। बल्कि, कई बार स्वास्थ्य देखभाल करने वाली टीमों के भीतर कम्यूनिकेशन गैप या फिर समन्वय अंतराल से मरीज पर बन आती है।

03 मई पर विशेष

प्रेस की स्वतंत्रता का आकलन करने के लिए मनाया जाता है 'अंतर्राष्ट्रीय प्रेस स्वतंत्रता' दिवस

सत्य को स्वीकारना आसान नहीं होता है, इसीलिए कुछ लोग सत्य उद्घाटित करने वाले से दुश्मनी रखते हैं। फिर भी कुछ लोग इस बात की परवाह न करते हुए इस रास्ते को ही चुनते हैं, लेकिन दुःखद स्थिति यह है कि फिर भी सत्यभाषी व कर्मठ पत्रकारों को वह सम्मान नहीं मिल पाता, जिसके कि वे पात्र हैं!

संकल्प शक्ति, अलोपी शुक्ला। **संयुक्त** राष्ट्र महासभा ने 03 मई को 'अंतर्राष्ट्रीय प्रेस स्वतंत्रता' की घोषणा की थी। यूनेस्को महासम्मेलन के 26वें सत्र में 1993 में इससे संबंधित प्रस्ताव को स्वीकार किया गया था। इस दिन के मनाने का उद्देश्य प्रेस की स्वतंत्रता के विभिन्न प्रकार के उल्लंघनों की गंभीरता के बारे में जानकारी देना है, जैसे- प्रकाशनों की कांट-छांट, उन पर जुर्माना लगाना, प्रकाशन को निलंबित कर देना और बंद कर देना आदि। इनके अलावा पत्रकारों, संपादकों और प्रकाशकों को परेशान किया जाना और उन पर हमले भी किये जाते हैं। यह दिन प्रेस की स्वतंत्रता को बढ़ावा देने और इसके लिए सार्थक पहल करने तथा दुनिया भर में प्रेस की स्वतंत्रता की स्थिति का आकलन करने का भी दिन है। वास्तव में प्रिंट व इलेक्ट्रानिक मीडिया की स्वतंत्रता, प्रकाशित सामग्री तथा फ़ोटोग्राफ़ वीडियो आदि के ज़रिए संचार और अभिव्यक्ति की

स्वतंत्रता है। प्रेस की स्वतंत्रता का विशेष रूप से यही अर्थ है कि शासन की ओर से इसमें कोई हस्तक्षेप न हो, लेकिन संवैधानिक तौर पर और अन्य क़ानूनी प्रावधानों के ज़रिए भी प्रेस की स्वतंत्रता की रक्षा आवश्यक है।

प्रेस की स्वतंत्रता का मतलब है कि किसी भी व्यक्ति को अपनी राय कायम करने और सार्वजनिक तौर पर इसे व्यक्त करने का अधिकार है। इसमें बिना किसी हस्तक्षेप के अपनी राय कायम करने तथा किसी भी मीडिया के ज़रिए, चाहे वह देश की सीमाओं से बाहर का मीडिया हो, सूचना और विचार हासिल करने और सूचना देने की आज़ादी शामिल है। इसका उल्लेख मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा के अनुछेद 19 में किया गया है। लेकिन, यहाँ पर यह समझना भी आवश्यक है कि मीडिया की आज़ादी बहुत कमज़ोर है। यद्यपि मीडिया की वास्तविक आज़ादी के लिए वातावरण निर्मित किया जाता है, लेकिन यह भी वास्तविकता है कि दुनिया में कई लोग ऐसे हैं, जिनकी पहुंच बुनियादी संचार प्रौद्योगिकी तक नहीं है। जैसे-जैसे इंटरनेट व अख़बारों पर ख़बरों और रिपोर्टिंग का सिलसिला बढ़ रहा है, लेखकों व पत्रकारों को और अधिक परेशान किया जाने लगा है तथा उन पर हमले भी किये जा रहे हैं।

भारत में पत्रकारों की ज़िम्मेदारी

भारत जैसे विकासशील देशों में मीडिया पर जातिवाद और सम्प्रदायवाद जैसे संकुचित विचारों के विरुद्ध संघर्ष करने और ग़रीबी तथा अन्य समाजिक बुराइयों के विरुद्ध लड़ाई में लोगों की सहायता करने की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है, क्योंकि लोगों का एक बहुत बड़ा वर्ग पिछड़ा और अनभिज्ञ है, इसलिये यह और भी ज़रूरी है कि आधुनिक व अध्यात्मिक विचार उन तक पहुंचाए जाएं और उनका पिछड़ापन दूर किया जाए, ताकि वे सजग भारत का हिस्सा बन सकें। इस दृष्टि से पत्रकारों की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कहाँ तक उचित

भारत में संविधान के अनुच्छेद 19 (1 ए) में भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लेख है, लेकिन उसमें शब्द 'प्रेस' का उल्लेख नहीं है, किंतु उप-खंड (2) के अंतर्गत इस अधिकार पर पाबंदियां लगाई गई हैं। इसके अनुसार, भारत की प्रभुसत्ता और अखंडता, राष्ट्र की सुरक्षा, विदेशों के साथ मैत्री संबंधों, सार्वजनिक व्यवस्था, शालीनता और नैतिकता के संरक्षण, न्यायालय की अवमानना, बदनामी या अपराध के लिए उकसाने जैसे मामलों में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर पाबंदियां लगाई जा सकती हैं।

साहित्य के क्षेत्र में रवीन्द्रनाथ टैगोर का है अभूतपूर्व योगदान

रवींद्रनाथ टैगोर एक ऐसे महान व्यक्तित्व थे, जिनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी। उन्होंने एक कवि, लेखक, नाटककार, संगीतकार, दार्शनिक, समाज सुधारक और चित्रकार के रूप में काम किया। 20वीं सदी की शुरुआत में बंगाली साहित्य और संगीत के साथ-साथ भारतीय कला को जीवंत बनाने का काम किया। टैगोर को 1913 में गीतांजलि के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वे इसे हासिल करने वाले पहले गैर-यूरोपीय और पहले गीतकार थे। टैगोर को गुरुदेव, कोबीगुरु, बिस्वकोबी जैसे उपनामों से भी जाना जाता था।

टैगोर की रचनाएं दो देशों का राष्ट्रगान बनीं। जिसमें 'जन गण मन' भारत का राष्ट्रगान बना, तो दूसरी ओर 'आमार सोनार बांग्ला' बांग्लादेश का राष्ट्रगान बना।

●कोलकाता में हुआ जन्म

रवींद्रनाथ टैगोर का जन्म 07 मई, 1861 को कोलकाता में हुआ था। टैगोर ने कालजयी रचना गीतांजलि लिखी। साल 1913 में वह साहित्य का नोबेल पुरस्कार जीतने वाले पहले गैर-

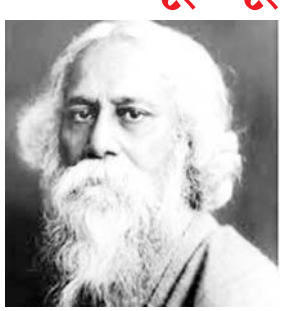

यूरोपीय और पहले एशियाई बने। साहित्यकार तो वे थे ही, लेकिन इसके अलावा चित्रकला और संगीत के क्षेत्र में भी उन्होंने महारत हासिल की। टैगोर की गीतांजलि, चोखेर बाली, गोरा, काबुलीवाला, चार अध्याय और घरे बाइरे सहित ढेरों बेहद चर्चित रचनाएं हैं।

●साहित्य के क्षेत्र में योगदान

रवींद्रनाथ टैगोर ने कई कृतियां लिखीं, जिनमें कविताएं, लघु कथाएं, उपन्यास काफी लोकप्रिय हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में समाजिक बुराइयों जैसे बाल विवाह और दहेज प्रथा को भी उजागर करने के साथ ही इतिहास और अध्यात्म से जुड़ी कई किताबें भी लिखीं। रवींद्रनाथ टैगोर ने अपने साहित्यिक रचना में भारतीय संस्कृति से भी रू-ब-रू कराया। उन्होंने लेखन की शुरुआत अपनी भाषा बंगाली से की, लेकिन बाद में उनमें से कई का अंग्रेज़ी में भी अनुवाद किया।

उनकी पहली रचना 'भिखारिणी' नामक लघुकथा थी। उन्होंने अपनी लेखनी में समाजिक मुद्दों और आम आदमी की समस्याओं को भी उजागर किया। उनकी कुछ सबसे प्रसिद्ध रचनाएं-काबुलीवाला, गोरा, नौकाडुबी, चतुरंगा, पोस्ट मास्टर, चोखेर बाली, घाटेर कथा आदि हैं।

सन् 1913 में टैगोर को बड़ी कामयाबी मिली। उन्हें साहित्य में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया और वे एशिया के पहले नोबेल पुरस्कार विजेता बने।

●1941 में दुनिया से हुए विदा

उनका आख़िरी समय काफी कष्टप्रद रहा और 1937 में वे कोमा में चले गए। लंबी पीड़ा और दर्द के बाद 07 अगस्त 1941 को जोरासांको हवेली (कोलकाता) में उनका निधन हो गया। यह वही जगह थी, जहां उनका बचपन बीता था।

हर वर्ष 08 मई को मनाया जाता है विश्व रेडक्रॉस दिवस

विश्व रेडक्रॉस दिवस हर साल 08 मई को मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य असहाय और घायल सैनिकों तथा नागरिकों की रक्षा करना है।

रेडक्रॉस एक इंटरनेशनल ऑर्गेनाइजेशन है और इसका हेडक्वाटर स्विटजरलैंड के जिनेवा में स्थित है। इंटरनेशनल कमेटी ऑफ रेडक्रॉस और कई नेशनल सोसाइटी मिलकर इस संस्था का संचालन करती हैं।

वैसे तो विश्व रोडक्रॉस का काम हमेशा जारी रहता है। किसी भी बीमारी या युद्ध संकट में इनके वॉलेंटियर्स लोगों की सेवा में तत्पर रहते हैं, लेकिन कोरोना महामारी के काल में इनका काम और बढ़ गया है। कोविड को हराने के लिए रेडक्रॉस युद्धस्तर पर काम कर रही है।

इतिहास: रेडक्रॉस सोसाइटी की अहमियत उसके इतिहास में छिपी है। स्विटजरलैंड के कारोबारी जीन हेनरी ड्यूनेंट 1859 में इटली में सॉल्फेरिनो का युद्ध देखा, जिसमें में बड़ी तादात में सैनिक मरे और घायल हुए थे। किसी भी सेना के पास घायल सैनिकों की देखभाल के लिए क्लिनिकल सेटिंग नहीं थी। ड्यूनेंट ने वॉलेंटियर्स का एक ग्रुप बनाया, जिसने युद्ध में घायल जवानों तक खाना और पानी पहुंचाया। इतना ही नहीं इस ग्रुप ने उनका इलाज कर उनके परिजनों को चिट्ठियां भी लिखीं।

इस घटना के 03 साल बाद हेनरी ने अपने अनुभव को एक किताब 'ए मेमोरी ऑफ सॉल्फेरिनो' की शक्ल देकर प्रकाशित कराया। पुस्तक में उन्होंने एक स्थायी अंतरराष्ट्रीय सोसायटी की स्थापना का सुझाव दिया। ऐसी सोसायटी जो युद्ध में घायल लोगों का इलाज कर सके, जो किसी भी देश की नागरिकता के आधार पर नहीं, बल्कि मानवीय आधार पर लोगों के लिए काम करे। उनके इस सुझाव पर अगले ही साल अमल किया गया।

16 देशों ने अपनाया

जिनेवा पब्लिक वेल्फेयर सोसायटी ने फ़रवरी 1863 में एक कमेटी का गठन किया, जिसकी अनुशंसा पर अक्टूबर 1863 में एक विश्व सम्मेलन किया गया। इसमें 16 राष्ट्रों के प्रतिनिधि शामिल हुए, जिसमें कई प्रस्तावों और सिद्धांतों को अपनाया गया। इसके बाद 1876 में कमेटी ने इंटरनेशनल कमेटी ऑफ द रेडक्रॉस नाम अपनाया।

बुरहानपुर में डायरिया का कहर

बुरहानपुर। मध्यप्रदेश के बुरहानपुर में डायरिया का कहर बढ़ता जा रहा है। सबसे ज़्यादा मामले छोटे बच्चों में देखने को मिल रहे हैं। अस्पताल में बेड की कमी होने के कारण एक ही बेड पर तीन-तीन बच्चों को लिटा कर इलाज किया जा रहा है। हालात ऐसे है कि शहर के 5 वार्डों तक यह बीमारी फैल चुकी है, जिसके कारण रविवार को इससे दो बच्चों की मौत भी हो गई।

दरअसल, बुरहानपुर में खराब पानी की समस्या बढ़ती जा रही है। लीकेज होने के कारण नाली का गंदा पानी तेजी से फैल रहा है, जिससे डायरिया की समस्या बढ़ती जा रही है। इस बीच रविवार को कांग्रेसी पार्षदों और नेताओं ने ज़िला अस्पताल में एकत्र होकर विरोध प्रदर्शन किया। उन्होंने महापौर और नगर निगम प्रशासन के ख़िलाफ़ नारेबाजी भी की।

दो वाहनों में टक्कर होने से आठ की मौत और बारह घायल

बेमेतरा। छत्तीसगढ़ के बेमेतरा क्षेत्र में भीषण दुर्घटना होगई। इसमें 08 लोगों की मौत और 12 लोगों के घायल होने की खबर है। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

पुलिस के अनुसार, यह हृदयविदारक घटना रविवार देर रात कठिया गांव के पास हुई, जब एक कार सड़क किनारे खड़े मिनी ट्रक से टकरा गई। पीड़ित पथर्रा गांव के रहने वाले थे, जो तिरैया गांव में एक पारिवारिक कार्यक्रम में शामिल होने के बाद वापस लौट रहे थे।

सड़क हादसे में दो की मौत, एक गम्भीर रूप से घायल

कटनी/सिवनी। दूसरे चरण में मतदान ड्यूटी के बाद पति और भाई के साथ सिवनी अपने गृह ग्राम जाती हुई शिक्षिका की सड़क दुर्घटना का शिकार होगई। शनिवार की तड़के एनएच-44 पर छपारा बायपास में उनकी कार खड़े ट्रक में जा घुसी। कटनी के हाईस्कूल कुआं में पदस्थ प्रियवृंदा बिसेन (32) और उनके भाई बसंत पटले (40) की स्थल पर ही मौत हुई। पति चंद्रप्रकाश (35) को गंभीर हालत में नागपुर रेफर किया गया।

नर्मदा परिक्रमा पथ के महत्त्वपूर्ण हिस्से में किया जाएगा डामरीकरण

देवास। मां नर्मदा की परिक्रमा प्रतिवर्ष हज़ारों श्रद्धालु करते हैं। पैदल परिक्रमा मार्ग कई स्थानों पर घने जंगल, नदियों, पहाड़ों से गुज़रता है। इस मार्ग में कई बाधाएं परिक्रमा करने वालों को आती हैं। देवास ज़िले में खरगोन ज़िले के तरान्या से कनाड़ नदी पार करके परिक्रमावासी प्रवेश करते हैं और खंडवा ज़िले की सीमा में होकर छीपानेर तक देवास ज़िले में मां नर्मदा के किनारे पैदल यात्रा करते हैं। इस पूरे मार्ग का घने जंगल वाला बावड़ीखेड़ा-जयंतीमाता-पामाखेड़ी मार्ग डामरीकृत किया जाना स्वीकृत हो चुका है। यह

सड़क बनने से परिक्रमावासियों के अलावा स्थानीय ग्रामीणों को भी काफी लाभ होगा।

गौरतलब है कि इस यात्रा को करने के लिए हज़ारों लोग देशभर के कोने-कोने से प्रतिवर्ष आते हैं। पैदल करीब 03 माह से 06 माह के बीच इस यात्रा को श्रद्धालु पूरी करते हैं। पूरी यात्रा 3600 किलोमीटर से अधिक है। इस यात्रा में देवास ज़िले का भी एक बड़ा हिस्सा आता है। देवास ज़िले में लगभग 161 किलोमीटर का पैदल सफर मां नर्मदा के पास के घने जंगलों और गांवों से यात्री करते हैं। देवास ज़िले में खरगोन ज़िले के तरान्या से कनाड़ नदी पार कर परिक्रमावासी प्रवेश करते हैं और पीपरी, सीतावन, रतनपुर, बावड़ीखेड़ा होकर जयंती माता के पूर्व खाड़ी नदी तक ज़िले में सफर करते हैं।

लोनिवि के कार्यपालन यंत्री मनीष मरकाम का कहना है कि बावड़ीखेड़ा से पामाखेड़ी तक का मार्ग स्वीकृत हो चुका है। वन विभाग से औपचारिकताएं पूरी होने के बाद इसके टैंडर लगाए जाएंगे।

कर्ज़ देने वाले संस्थानों को भारतीय रिजर्व बैंक ने दी हिदायत, ग़लत ब्याज लिया है, तो तुरंत लौटाएं

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक ने कर्ज़ देने वाले बैंकों के साथ ही वित्तीय संस्थानों को सख्त हिदायत दी है। कहा गया है कि जिन संस्थानों ने भी ग़लत तरीके से अतिरिक्त ब्याज लिया है, वे तुरंत इस पर कार्रवाई करें और इसे लौटा दें। ये संस्थान ब्याज वसूलने में अनुचित तरीकों का सहारा ले रहे हैं। यह पूरी तरह से ग़लत है।

आरबीआई ने सोमवार को जारी सर्कुलर में कहा, 2003 से विनियमित संस्थाओं (आरई) को समय-समय पर दिशानिर्देश जारी किए जाते हैं। इनमें कर्ज़ मूल्य निर्धारण नीति पर निष्पक्षता और पारदर्शिता की बात है। उचित व्यवहार को लेकर स्पष्टता है। 31 मार्च 2023 को समाप्त वित्त वर्ष के लिए आरई की जांच के दौरान आरबीआई को ऋणदाताओं द्वारा ब्याज वसूलने में

कुछ अनुचित प्रथाओं के उदाहरण मिले हैं। आरबीआई ने प्रमुख रूप से निष्पक्षता और पारदर्शिता में अनुचित प्रथाओं को लेकर चिंता जताई है।

केंद्रीय बैंक ने कहा, सभी आरई कर्ज़ वितरण के तरीके, ब्याज के आवेदन और अन्य शुल्कों के संबंध में अपनी प्रथाओं की समीक्षा करें। सिस्टम स्तर पर बदलाव करें। ब्याज वसूलने के मुद्दे पर ज़रूरी सुधारात्मक कार्रवाई करें। आरबीआई ने कहा, ऑनसाइट जांच के दौरान यह पाया गया कि आरई ने कर्ज़ मंजूरी की तारीख या कर्ज समझौते की तारीख से ब्याज वसूला है। जबकि ब्याज तबसे वसूलना चाहिए, जब ग्राहक को लोन मिल चुका हो।

फर्जी बिल घोटाले में सब इंजीनियर और कम्प्यूटर ऑपरेटर गिरफ़्तार

इंदौर। इंदौर नगर निगम में हुए फर्जी बिल घोटाले में नगर निगम सब इंजीनियर उदयसिंह सिसोदिया और कम्प्यूटर ऑपरेटर चेतन भदौरिया को सोमवार को गिरफ़्तार कर लिया गया है। पुलिस के मुताबिक दोनों ठेकेदारों ने स्वीकार कर लिया है कि उनके खातों में घोटाले का पैसा आता था। दोनों ने निगम अफसरों की अहम भूमिका व मिलीभगत होने की भी बात स्वीकार की है। गौरतलब है कि नगर निगम इंदौर में फर्जी बिल लगाकर पैसे निकालने की राशि 100 करोड़ के पार चली गई है।

जानकारी के अनुसार, पुलिस ने रविवार देर रात दो ठेकेदार भाइयों मो.जाकिर और मो. साजिद को पकड़ा था, जिन्होंने पूछताछ में दोनों ने करोड़ों के घोटाले में इंजीनियर उदयसिंह और कम्प्यूटर ऑपरेटर चेतन की भूमिका बताई। गिरफ़्तार करके चारों आरोपियों को अदालत में पेश करके पुलिस ने पाँच दिनों के रिमांड पर लिया है।

जम्मू-कश्मीर में भारी बारिश, बर्फबारी और भूस्खलन से कई मकान ढहे

श्रीनगर/जम्मू। जम्मू-कश्मीर में भारी वर्षा और पहाड़ी क्षेत्रों में हिमपात से जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। प्रदेश में तीन दर्जन से अधिक मकान ढह गए और कई गिरने की कगार पर हैं। बारामुला, किश्तवाड़ और रियासी ज़िलों में सबसे अधिक नुक़सान हुआ है।

किश्तवाड़ ज़िले में भारी बारिश के कारण 12 घरों को नुक़सान पहुंचा, जिससे अधिकारियों को आपदा प्रतिक्रिया मशीनरी को हाई अलर्ट पर रखना पड़ा।

बस ने मोटरसाइकिल को मारी टक्कर, दंपत्ति की मौत

जबलपुर। जबलपुर-भोपाल राष्ट्रीय राजमार्ग में गुरुवार-शुक्रवार की मध्य रात्रि तेज गति से आ रही एक बस ने मोटरसाइकिल सवार दंपत्ति को टक्कर मार दी। इस दुर्घटना मोटरसाइकिल सवार बस के सामने के भाग में फंस गए। जब तक बस रुकती मोटरसाइकिल सहित उसमें सवार दंपत्ति कई फीट तक घिसट गए। गंभीर चोट लगने से मौके पर ही उनकी मौत हो गई। घटना शहपुरा थाना क्षेत्र में हुई। इस दौरान बस का चालक वाहन को मौके पर ही खड़ा करके भाग गया। पुलिस ने बस को ज़ब्त कर लिया है।

शहपुरा पुलिस के अनुसार, अधारताल सुभाष वार्ड निवासी विनोद रजक (47) अपनी पत्नी हेमलता (38) के साथ गुरुवार को एक विवाह समारोह में शामिल होने के लिए ग्राम भड़पुरा गया था। विवाह में सम्मिलित होने के बाद वह मध्यरात्रि लगभग एक बजे घर लौट रहा था। मोटरसाइकिल को विनोद चला रहा था, पीछे की सीट पर उसकी पत्नी बैठी थी।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, यात्री बस का रजिस्ट्रेशन नंबर एमपी 09, एफए/8008 है। वाहन कुश ट्रेवल्स का है, जिसमें सामने कांच पर श्रीनाथ और गौरी लिखा हुआ था। यह यात्री बस इंदौर से जबलपुर आ रही थी। इसमें जबलपुर सहित रीवा के यात्री सवार थे। दुर्घटना के बाद जब बस का चालक फरार हो गया तो यात्रियों को पुलिस ने अन्य वाहन से जबलपुर पहुंचाया।

पिकअप की टक्कर से श्रमिक की मौत

पथरिया, दमोह। पथरिया थाना क्षेत्र में आने वाले खिरिया गांव निवासी कंछेदी अहिरवार, उम्र 50 वर्ष को पिकअप वाहन चालक ने टक्कर मार दी, जिससे मौके पर ही उसकी मौत हो गई। मृतक मज़दूरी करता था और घर के उपयोग के लिए लकड़ी लेने जंगल गया था। लौटते समय दमोह मार्ग पर मोहनपुर गांव के पास सड़क किनारे लकड़ी लेकर आ रहे कंछेदी को एक पिकअप वाहन चालक ने टक्कर मार दी। इस हादसे में कंछेदी की मौत हो गई और पिकअप वाहन सड़क किनारे जाकर झाड़ियां में घुस गया। घटना के बाद वाहन चालक फरार हो गया, जिसकी पुलिस तलाश कर रही है।

शव की पहचान होने के बाद पुलिस ने परिवार के लोगों को सूचना दी, जिसके बाद परिवार के लोग मौके पर पहुंचे। अब शव का पोस्टमार्टम कराने के बाद पुलिस ने शव परिजनों को सौंप दिया।

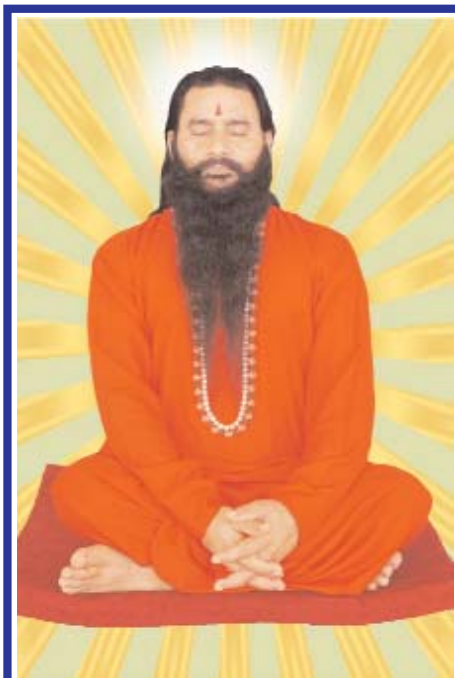

चिन्तन

आज लोगों को तरह-तरह के हथकंडे अपनाकर भ्रमित किया जा रहा है कि आप एक रुद्राक्ष खरीद लें, दो-दो, ढ़ाई-ढ़ाई हज़ार के एक रुद्राक्ष खरीद लें और आपको सब सुख-सुविधायें मिल जायेंगी, आपके देवी-देवता प्रसन्न हो जायेंगे, आपके बच्चों की नौकरी लग जायेगी और आपकी सब परेशानी दूर हो जायेगी। वे बेचारे पहले से ही परेशानियों से ग्रसित हैं, फिर भी सोचते हैं कि चलो दो-ढ़ाई हज़ार का रुद्राक्ष ही खरीद लें, जिससे हमारे बच्चे की नौकरी लग जाये, लेकिन उन्हें कुछ लाभ नहीं मिलता। इन लुटेरों से सावधान रहो। सत्य को पहचानने का प्रयास करो। अरे! आत्मा के रूप में प्रकृतिसत्ता ने सब कुछ आपको दे रखा है। आत्मा की शरण में आ जाओ। सबसे ज़्यादा शक्तिशाली आपकी आत्मा है, उसके आवरण को हटा दो, तो जो आपको रुद्राक्ष पहनने से लाभ नहीं मिलेगा, जो रत्न-अंगूठियाँ धारण करने से लाभ नहीं मिलेगा, यदि कुछ क्षण ही आत्मसाधना करोगे, तो उससे वह लाभ मिलने लगेगा। सबसे बड़ा नगीना तो 'माँ' ने आपके अन्दर बैठा रखा है। सबसे बड़ी चेतना तो 'माँ' ने तुम्हें दे रखी है।

ऋषिवाणी

धर्मसम्राट् युग चेतना पुरुष सद्गुरुदेव परमहंस योगीराज **श्री शक्तिपुत्र जी महाराज**

नशामुक्ति शंखनाद

शक्ति चेतना जनजागरण शिविर, दमोह (म.प्र.), 18-04-2015

क्रमशः...

यही वह भारतभूमि है, जहाँ नारियों के अन्दर इतना सशक्त तपबल रहता था कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश को शिशु बनाकर पालने पर झूलने के लिए मज़बूर कर देतीं थीं। यह सामर्थ्य इसी देश के वासियों के अन्दर थी।

इस भारतभूमि में अनेक ऋषि-मुनि हुए, अनेक सिद्ध साधिकाएं हुईं, अनेक सती हुईं, जिनके पास अलौकिक सामर्थ्य थी, जबकि आज का समाज असमर्थता का जीवन जी रहा है। हम 'माँ' के उस अटूट रिश्ते को महसूस ही नहीं कर पा रहे हैं कि 'माँ' ने हमें इतना दे रखा है कि हमको और कुछ मांगने की आवश्यकता ही नहीं है, हम फिर भी केवल मांगते चले जा रहे हैं।

आत्मसत्ता, गुरुसत्ता और प्रकृतिसत्ता, इन तीनों सत्ताओं को एक समान मान करके चलना चाहिए। जब आप अपनी आत्मा की साधना कर रहे होते हैं, तब भी गुरु एवं 'माँ' की आराधना कर रहे होते हैं, चूंकि आत्मा उस परमसत्ता का अंश है और परमसत्ता के अंश के किसी भी क्रम से जुड़ करके जब हम आगे की ओर बढ़ना प्रारम्भ कर देते हैं, तो हमें वह ज्ञान प्राप्त होता चला जाता है।

आत्मज्ञान से बड़ा दूसरा कोई ज्ञान नहीं है। आत्मज्ञान की ओर बढ़ने के लिए मेरे द्वारा बहुत ही सहज-सरल मार्ग बताए गए हैं। आज वेद, पुराण, शास्त्रों का अध्ययन किसलिए किया जाता है? उनका अध्ययन करके हमको यही मार्ग तो मिलता है कि हम कैसा जीवन जिएं, हमारा आचार-विचार कैसा हो, हमारा व्यवहार कैसा हो, प्रकृतिसत्ता के साथ हमारा सम्बन्ध कैसा हो, इष्ट के साथ कैसा सम्बन्ध हो, गुरु के साथ कैसा सम्बन्ध हो? इस प्रकृति में जो कुछ भी हम जड़, चेतन देख रहे हैं, इसके साथ हमारा कैसा व्यवहार हो, कैसा कर्त्तव्य हो? इन कर्त्तव्यों का ज्ञान ही तो वेद, पुराण, शास्त्र कराते हैं, मगर आज धर्म की पूरी दिशा भटकती चली जा रही है।

ग्रंथज्ञानी अनेक हैं, मगर वे आत्मज्ञानी नहीं हैं और यदि वे आत्मज्ञानी होते, तो समाज का पतन न होता। ग्रंथज्ञानियों की कोई कमी नहीं है। अनेक लोग तो वेद, पुराण, शास्त्र, उपनिषद, रट्टू तोते के समान रट लेते हैं और इसी को अपनी तृप्ति मान लेते हैं। एक इंजीनियर यदि केवल किसी मकान को बनाने का पूरा ज्ञान प्राप्त करले कि वह नीव से लेकर महल तक खड़ा करने का पूरा ज्ञान रखता है और इसी में तृप्त होकर बैठ जाए, तो वह भवन का आनन्द कभी नहीं प्राप्त कर सकता। ज्ञान है, मगर भवन का निर्माण नहीं किया, तो वह भवन का सुख प्राप्त नहीं कर सकता और न ही भवनों का सुख दूसरों को दे सकता है और आजकल यही गति हमारे ग्रंथज्ञानियों की हो रही है, जो अपना पूरा जीवन ग्रंथों के अध्ययन में और फिर लोगों को सुनाने में लगा देते हैं।

... शेष अगले अंक में

संकलनः पूजा शुक्ला

नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान् जीवन ही सच्चा जीवन है

पथरिया। सद्गुरुदेव परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र महाराज के आशीर्वाद से भगवती मानव कल्याण संगठन एवं पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में हर माह की भांति इस माह भी चतुर्थ रविवार को नया बसस्टैंड हाल, दमोह रोड पथरिया, ज़िला-दमोह में मासिक महाआरतीक्रम सम्पन्न किया गया।

समापन बेला पर संगठन के क्षेत्रीय पदाधिकारियों ने उपस्थित भक्तों को साधनाक्रमों की जानकारी देते हुए कहा कि नशे-मांसहार से मुक्त चरित्रवान्, चेतनावान् पुरुषार्थी और परोपकारमय जीवन ही सच्चा जीवन है। उद्बोधनक्रम के पश्चात् सभी भक्तों ने शक्तिजल और प्रसाद ग्रहण करके जीवन को धन्य बनाया।

कुशमी मे संपन्न हुआ मासिक महाआरतीक्रम

भुईमाड़। हर माह की भांति इस माह भी चौथे रविवार को भगवती मानव कल्याण संगठन एवं पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में सरस्वती विद्यालय, कुशमी में मासिक महाआरतीक्रम संपन्न किया गया। कार्यक्रम के शुभारम्भ में अंचल जी और राजीव गुप्ता जी ने 'माँ'-गुरुवर के जयकारे लगवाए।

साधनाक्रम और दिव्यआरती के उपरान्त संगठन के क्षेत्रीय पदाधिकारियों ने संगठन की जनकल्याणकारी विचारधारा पर प्रकाश डाला। अंत में मझौली तहसील शाखा के अध्यक्ष अंगद प्रसाद गुप्ता जी ने उपस्थित भक्तों के प्रति आभार जताया। पश्चात् शक्तिजल और प्रसाद का वितरण किया गया।

मासिक महाआरतीक्रम

पटेरा। सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के आशीर्वाद से हर माह की तरह इस माह भी चतुर्थ रविवार को निजनिवास इन्दल सिंह परमार, ब्लॉक तिगड्डा, पटेरा, ज़िला-दमोह में समारोहपूर्वक महाआरतीक्रम सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर उपस्थित नए भक्तों ने 'माँ'-गुरुवर की दिव्यछवि के समक्ष नतमस्तक होकर नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान् जीवन जीने का संकल्प

सहाद्रि नामक पर्वत पर स्थित है भीमशंकर ज्योतिर्लिंग

कुंभकर्ण के पुत्र भीम को मारकर यहां स्थापित हुए थे भगवान् शिव

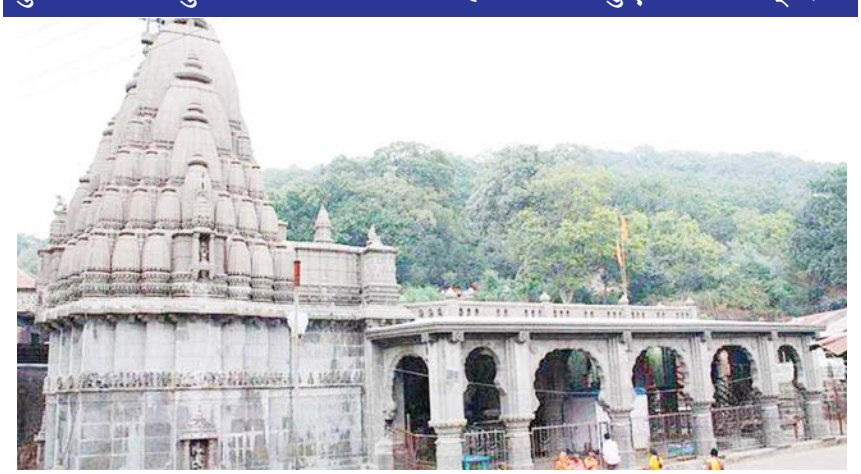

भीमशंकर ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र के पुणे से लगभग 110 किमी दूर सहाद्रि नामक पर्वत पर स्थित है। इस ज्योतिर्लिंग की स्थापना के पीछे कुंभकर्ण के पुत्र भीम की एक कथा प्रसिद्ध है।

कहा जाता है कि कुंभकर्ण के एक पुत्र का नाम भीम था। कुंभकर्ण को कर्कटी नाम की एक महिला पर्वत पर मिली थी, उसे देखकर कुंभकर्ण उस पर मोहित हो गया और उससे विवाह कर लिया। विवाह के बाद कुंभकर्ण लंका लौट आया, लेकिन कर्कटी पर्वत पर ही रही। कुछ समय बाद कर्कटी को भीम नाम का पुत्र हुआ। जब श्रीराम ने कुंभकर्ण का वध कर दिया, तो कर्कटी ने अपने पुत्र को देवताओं के छल से दूर रखने का फैसला किया।

बड़े होने पर जब भीम को अपने पिता की मृत्यु का कारण पता चला, तो उसने देवताओं से बदला लेने का निश्चय कर लिया। भीम ने ब्रह्मा जी की तपस्या करके उनसे अतिबलशाली होने का वरदान प्राप्त कर लिया।

कामरूपेश्वप नाम के राजा भगवान् शिव के भक्त थे। एक दिन भीम ने राजा को शिवलिंग की पूजा करते हुए देख लिया। भीम ने राजा को भगवान् की पूजा छोड़कर उसकी पूजा करने को कहा। राजा के बात न मानने पर भीम ने उन्हें बंदी बना लिया। राजा ने कारागार में ही शिवलिंग बनाकर उनकी पूजा करने लगा। जब भीम ने यह देखा तो उसने अपनी तलवार से राजा के बनाए शिवलिंग को तोड़ने का प्रयास किया। ऐसा करने पर शिवलिंग में से स्वयं भगवान् शिव प्रकट होगए और उनका भीम के साथ घोर युद्ध हुआ, जिसमें भीम की मृत्यु होगई। फिर देवताओं ने भगवान् शिव से हमेशा के लिए उसी स्थान पर रहने की प्रार्थना की। देवताओं के कहने पर शिव लिंग के रूप में उसी स्थान पर स्थापित हो गए। इस स्थान पर भीम से युद्ध करने की वजह से इस ज्योतिर्लिंग का नाम भीमशंकर पड़ गया।

➲ नशाविरोधी जनान्दोलन

बांदकपुर में पकड़ी गई अवैध शराब

दमोह ज़िले के हिण्डोरिया थानान्तर्गत बांदकपुर बाज़ार में पकड़ी गई शराब

संकल्प शक्ति। भगवती मानव कल्याण संगठन एवं भारतीय शक्ति चेतना पार्टी के कार्यकर्ता अवैध शराब पकड़कर सम्बंधित थाने की पुलिस को सूचना देकर लगातार ज़ब्त करवा रहे हैं साथ ही आरोपियों और संलग्न वाहनों के विरुद्ध भी क़ानूनी कार्यवाही करवाई जा रही है।

इसी क्रम में, दिनांक 29 अप्रैल को रात्रि 08:00 बजे दमोह ज़िले के हिण्डोरिया थाने की चौकी बांदकपुर अन्तर्गत बांदकपुर बाज़ार में दो पेटी देशी प्लेन शराब पकड़ी गई। आरोपी छोटू पटेल, निवासी-बांदकपुर और नागमणि, निवासी-गोविन्दगढ़, हीरो एचएफ डीलक्स मोटरसाइकिल क्रमांक-एमपी 34, जेडबी/1299 से शराब लेजा रहे थे।

सेहत के लिए है बहुत फायदेमंद है बुरांश का पानी

बुरांश पहाड़ों में उगने वाला बहुत ही फायदेमंद और शक्तिशाली औषधीय गुणों से युक्त पेड़ है। बुरांश के पेड़ का औषधीय इस्तेमाल कई तरह से किया जा सकता है। इसका इस्तेमाल करने से कई गंभीर बीमारियों के ख़तरे को कम करने से लेकर स्किन से जुड़ी समस्याओं में फायदा मिलता है। बुरांश को हिमालय का अनमोल रत्न भी माना जाता है। बुरांश के फूलों का पानी शरीर की कई गंभीर समस्याओं को ठीक करने में मदद करता है। विटामिन, मिनरल्स और अनेक पोषकतत्त्वों से युक्त बुरांश के पानी का औषधीय इस्तेमाल कई समस्याओं के निदान हेतु किया जाता है।

पौष्टिक गुणों से भरपूर

बुरांश के पानी में विटामिन सी, ए, के और बी की अच्छी मात्रा होती है। यह भूख को नियंत्रित करने में मदद करता है, शरीर को मज़बूत बनाता है। नियमित रूप से बुरांश के पानी का सेवन करने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद मिलती है।

हार्ट के लिए लाभदायक

बुरांश पानी में एंटीऑक्सीडेंट सींबा, कैरोटीन, और ल्यूटिन आदि भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इसका सेवन करने से हार्ट डिजीज के खतरे को कम करने में मदद मिलती है।

पाचनतंत्र को करे ठीक

बुरांश के पानी में मौजूद विटामिन सी की मात्रा पाचनतंत्र को मज़बूत करने में मदद करती है। इसका सेवन करने से पेट से जुड़ी समस्याओं से छुटकारा मिलता है।

ताक़त और ऊर्जा बढ़ाए

बुरांश के पानी का सेवन करने से शरीर की ताक़त और ऊर्जा बढ़ाने में मदद मिलती है। इसमें मौजूद शुगर की प्राकृतिक मात्रा से भूख को कंट्रोल करने और शरीरिक क्षमता को बढ़ाने में मदद मिलती है।

स्किन को हेल्दी बनाए

बुरांश के पानी में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स और विटामिंस स्किन को चमकदार और हेल्दी बनाए रखने में मदद मिलती है। आप इसे सीधे स्किन पर भी लगा सकते हैं और सेवन भी कर सकते हैं।

फूल भी है अतिफायदेमंद

गहरे लाल रंग का बुरांश का फूल कई समस्याओं और बीमारियों में भी फायदेमंद माना जाता है। इस फूल का सेवन करने से शरीर में पानी की कमी से लेकर कई गंभीर समस्याओं से छुटकारा पाने में मदद मिलती है। लेकिन, इसका इस्तेमाल करने से पहले डॉक्टर की सलाह अवश्य लें।

एक प्रकार का मिनरल है सेलेनियम

हमारे शरीर को हर तरह के पोषकतत्त्व की ज़रूरत होती है। सभी पोषकतत्त्व शरीर के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनमें से किसी की भी कमी स्वास्थ्य परेशानियों को बढ़ा सकती है। कैल्शियम, मिनरल और प्रोटीन की तरह एक और पोषकतत्त्व है सेलेनियम। सेलेनियम की हमारे शरीर और दिमाग की कार्य प्रणाली में बहुत अहम भूमिका है। अगर किसी व्यक्ति के शरीर में सेलेनियम की कमी होजाए तो उसे हार्ट प्रॉब्लम और थायराइड जैसी समस्या होती है।

सेलेनियम क्या है?

विशेषज्ञों का कहना है कि सेलेनियम एक प्रकार का मिनरल है। सेलेनियम मुख्य रूप से प्रोटीन को बनाने में मदद करता है। यह एंटीऑक्सीडेंट एंजाइम की तरह काम करता है। सेलेनियम थायराइड ग्रंथि की कार्यप्रणाली, डीएनए के उत्पादन और शरीर को बीमारियों से बचाने में मदद करता है। महिलाओं के शरीर में अगर सेलेनियम की मात्रा सही हो, तो यह गर्भपात के जोखिम को भी कम करता है।

सेलेनियम की कमी होने की वजह

सेलेनियम की कमी के मामले बहुत की कम देखने को मिलते हैं। मुख्य रूप से जो लोग पोषण युक्त डाइट ले रहे हैं, उनमें सेलेनियम की कमी नहीं होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि सेलेनियम को विटामिन ई की कमी से जोड़कर देखा जाता है। जो लोग विटामिन ई युक्त आहार का सेवन करते हैं, उनमें सेलेनियम की कमी नहीं देखी जाती है। अगर किसी व्यक्ति में सेलेनियम की कमी होती है, तो उसका मुख्य कारण पेट से संबंधी कोई सर्जरी हो सकती है।

सेलेनियम की कमी के लक्षण

उल्टी होना, सिर दर्द, बेहोश होना और भ्रम की स्थिति निर्मित होना।

सेलेनियम की कमी को कैसे पूरा करें?

विशेषज्ञों का मानना है कि सेलेनियम की कमी को खानपान के ज़रिए ठीक किया जा सकता है। आप इसकी कमी को पूरा करने के लिए अपने भोजन में नट्स, बीन्स और दालों को शामिल करें।

त्वचा और बालों के लिए बहुत फायदेमंद है सेमल की छाल

आयुर्वेद में सेमल के वृक्ष को औषधीय गुणों से भरपूर माना जाता है। इस वृक्ष के पत्ते, फूल और छाल, सभी में औषधीय गुण पाए जाते हैं। सेमल की छाल त्वचा और बालों के लिए काफी फायदेमंद होती है। इतना ही नहीं, सेमल की छाल कई बीमारियों को भी दूर करने में मदद करती है। आयुर्वेद में कई बीमारियों का इलाज करने के लिए सेमल की छाल का उपयोग किया जाता है। आप त्वचा और बालों पर भी सेमल की छाल का इस्तेमाल कर सकते हैं।

● त्वचा पर सेमल की छाल कैसे लगाएं?

सेमल वृक्ष की छाल त्वचा के लिए बेहद फायदेमंद होती है। सेमल की छाल कील-मुंहासों, दाग-धब्बों और फोड़े-फुंसियों से छुटकारा दिलाती है। इतना ही नहीं, सेमल की छाल का उपयोग गहरे जख्म या चोट को ठीक करने के लिए भी किया जा सकता है। इसके लिए आप सेमल की छाल लें। इन्हें बारीक पीसकर पाउडर बना लें। अब इसमें पानी या गुलाब जल डालें। फिर इस पेस्ट को अपनी त्वचा पर लगाएं। आधे घंटे बाद त्वचा को पानी से साफ कर लें। सप्ताह में 2-3 बार त्वचा पर सेमल की छाल का पाउडर लगाने से आपको काफी लाभ मिलेगा। आप चाहें तो सेमल की छाल के साथ इसकी पत्तियों या फूलों का रस भी मिला सकते हैं।

● सेमल की छाल के फायदे

सेमल की छाल का पाउडर त्वचा के दाग-धब्बों और मुंहासों को ठीक करने में मदद करता है। इस छाल का पाउडर लगाने से त्वचा की रंगत में भी सुधार होता है। सेमल की छाल, त्वचा पर निखार लाता है। साथ ही, त्वचा को मुलायम और कोमल भी बनाता है।

इतना ही नहीं, सेमल की छाल, डैंड्रफ और इंफेक्शन से छुटकारा दिलाती है। साथ ही, बालों को मुलायम भी बनाता है। इस छाल का पाउडर बालों के रूखेपन को भी दूर करता है।

दूसरे चरण में 88 सीटों पर हुई 68.49 प्रतिशत वोटिंग

संकल्प शक्ति। लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण में 13 राज्यों की 88 सीटों पर 68.49 प्रतिशत वोटिंग हुई है। त्रिपुरा में सबसे अधिक 79.66 प्रतिशत, जबकि महाराष्ट्र में 59 प्रतिशत, बिहार में 57.81 प्रतिशत, मध्यप्रदेश में 58 प्रतिशत, राजस्थान में 64 प्रतिशत और बंगाल में 73 प्रतिशत वोट पड़े। उत्तरप्रदेश मे सबसे कम अर्थात् लगभग 54 प्रतिशत मतदान हुआ है।

➲ किन-किन राज्यों में हुई वोटिंग?

दूसरे चरण में केरल की सभी 20 सीट, कर्नाटक की 28 में से 14 सीट, राजस्थान की 13 सीट, महाराष्ट्र और उत्तरप्रदेश की 8-8 सीट, मध्यप्रदेश की 6 सीट, असम और बिहार की 5-5 सीट, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल की 3-3 सीट पर वोटिंग हुई। मणिपुर, त्रिपुरा और जम्मू-कश्मीर में 1-1 सीट पर वोटिंग हुई।

साल में दो बार होगी बोर्ड परीक्षा, शिक्षा मंत्रालय ने सीबीएसई को दिए निर्देश

नई दिल्ली। अगले शैक्षणिक सत्र 2025-26 से साल में दो बार बोर्ड परीक्षाएं हो सकती हैं। शिक्षा मंत्रालय ने केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) से इसके लिए तैयारी करने को कहा है। हालांकि सेमेस्टर सिस्टम शुरू करने की योजना नहीं है। सूत्रों के अनुसार, मंत्रालय और सीबीएसई के अधिकारी साल में दो बार बोर्ड परीक्षा आयोजित करने को लेकर अगले महीने स्कूलों के प्राचार्यों के साथ परामर्श करेंगे।

सूत्र बतलाते हैं कि 2025-26 के शैक्षणिक सत्र से बोर्ड परीक्षाओं के दो संस्करण आयोजित करने का विचार किया जा रहा है, लेकिन तौर-तरीकों पर अभी भी काम करने की ज़रूरत है।

पिछले साल शिक्षा मंत्रालय द्वारा घोषित न्यू करिकुलम फ्रेमवर्क (एनसीएफ) के अनुसार, बोर्ड परीक्षाएं साल में दो बार आयोजित की जाएंगी, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि छात्रों के पास प्रदर्शन सुधारने के लिए पर्याप्त समय और अवसर हो।

सीडीएस के दौरे से भारत-फ्रांस के संबंध हुए और मज़बूत, महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर हुई चर्चा

नई दिल्ली। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान फ्रांस का दौरा करके भारत लौट आये हैं। उनके इस दौरे ने भारत और फ्रांस के बीच लंबे समय से चली आ रही रणनीतिक साझेदारी की पुष्टि की है। साथ ही दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय रक्षा सहयोग को और मजबूत किया है।

जनरल अनिल चौहान ने फ्रांसीसी अंतरिक्ष कमान तथा लैंड फोर्सज कमांड का दौरा किया। इसके अलावा उन्होंने इकोल मिलिटेयर (मिलिट्री स्कूल) में सेना और संयुक्त स्टाफ कोर्स के सैन्य छात्र अधिकारियों को

संबोधित किया। यात्रा के दौरान सीडीएस ने सैन्य उपकरणों और उच्च प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में रक्षा सहयोग बढ़ाने के लिए फ्रांस के आयुध महानिदेशालय के जनरल प्रतिनिधि इमैनुएल चिवा से मुलाकात की।

रक्षा मंत्रालय ने रविवार को कहा कि चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान ने फ्रांस की व्यापक यात्रा की, जिसने भारत और फ्रांस के बीच लंबे समय से चली आ रही रणनीतिक साझेदारी की पुष्टि की है। उनकी बातचीत में फ्रांस से 26 राफेल जेट और तीन स्कार्पीन पनडुब्बियां खरीदने की भारत की योजना पर चर्चा हुई। पिछले साल जुलाई में रक्षा मंत्रालय ने स्वदेशी रूप से निर्मित विमान वाहक आईएनएस विक्रांत पर तैनाती के लिए फ्रांस से 26 राफेल जेट की खरीद को मंजूरी दी थी।

VVPAT वेरिफिकेशन की मांग वाली याचिका ख़ारिज,

कैंडिडेट की शिकायत पर EVM जांच होगी

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट EVM (इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन) से डाले गए वोटों का VVPAT पर्चियों से मिलान की मांग करने वाली याचिकाएं ख़ारिज कर दी हैं। हालांकि अदालत ने कहा कि राजनीतिक पार्टियां और कैंडिडेट्स रिजल्ट जारी होने के 07 दिन के भीतर EVM की जांच करवा सकते हैं। इसके लिए 05 प्रतिशत EVM की जांच हो सकेगी। इन 05 प्रतिशत EVM का सिलेक्शन शिकायत करने वाला प्रत्याशी या उसका प्रतिनिधि करेगा। इस जांच का खर्च कैंडिडेट को ही उठाना होगा, हालांकि आरोप सही साबित होने पर पैसे रिफंड किए जाएंगे।

सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को दिए तीन निर्देश

सिंबल लोडिंग प्रक्रिया के पूरा होने के बाद इस यूनिट को सील कर दिया जाए। सील की गई यूनिट को 45 दिन के लिए स्ट्रॉन्ग रूम में स्टोर किया जाए। इलेक्ट्रॉनिक मशीन से पेपर स्लिप की गिनती के सुझाव का परीक्षण कीजिए और यह भी देखिए कि क्या चुनाव निशान के अलावा हर पार्टी के लिए बार कोड भी हो सकता है?

संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच पर गूंजेगी भारतीय महिला सशक्तीकरण की गूंज

नई दिल्ली। महिलाओं के हितों की रक्षा और स्थानीय प्रशासन में उनकी भागीदारी को बढ़ाने के उद्देश्य से ही 29 अप्रैल से तीन मई तक न्यूयार्क में आयोजित संयुक्त राष्ट्र संघ के कमीशन ऑन पॉपुलेशन डेवलपमेंट (सीपीडी-57)- 2024 में तीन मई को भारत सरकार के पंचायतीराज मंत्रालय के सहयोग से एसडीजी का स्थानीयकरण, भारत में स्थानीय प्रशासन में महिलाओं की अग्रणी भूमिका का भी विशेष सत्र रखा गया है। तो, स्थानीय प्रशासन में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और महिला सशक्तीकरण की गूंज संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच पर भी गूंजेगी। सरकार के प्रयासों की सफलता के प्रतीक के रूप में राजस्थान, त्रिपुरा और आंध्रप्रदेश से दो महिला सरपंच और

एक ज़िला परिषद अध्यक्ष तीन मई को न्यूयार्क स्थित संयुक्त राष्ट्र संघ मुख्यालय में आयोजित सम्मेलन में अपने अनुभवों के साथ बदलाव की कहानी सुनाएंगी।

सतत विकास के लक्ष्य पर भारत स्थायी मिशन के रूप में काम कर रहा है और इनका स्थानीयकरण करते हुए 17 लक्ष्यों को नौ थीम में विभाजित किया है, जिनमें से एक महिला अनुकूल पंचायत (वुमन फ्रेंडली पंचायत) भी है।

भारतीय युद्धपोत ने पनामा ध्वज वाले जहाज पर हुए हमले का दिया करारा जवाब

नई दिल्ली। भारतीय नौसेना के एमवी एंड्रोमेडा स्टार पीएम ने रविवार को बताया कि भारतीय युद्धपोत, आईएनएस कोच्चि ने रविवार को पनामा-ध्वजांकित कच्चे तेल टैंकर पर हमले से जुड़ी समुद्री सुरक्षा घटना का ताबड़तोड़ जवाब दिया। गौरतलब है कि संकटग्रस्त तेल टैंकर को भारतीय नौसेना के जहाज द्वारा रोक लिया गया था और स्थिति का आकलन करने के लिए भारतीय नौसेना के हेलीकॉप्टर द्वारा हवाई टोही की गई थी।

इसके अलावा, संकटग्रस्त जहाज पर एक विस्फोटक आयुध निपटान (ईओडी) टीम को भी तैनात किया गया था। नौसेना ने अपने बयान में कहा कि कुल 30 चालक दल (22 भारतीय नागरिकों सहित) सुरक्षित हैं और जहाज अगले बंदरगाह के लिए अपने निर्धारित पारगमन को जारी रख रहा है।

बीमार हो रहीं हैं दुनिया की लाखों झील, भारत की 3,043 झीलों पर ख़तरा

नई दिल्ली। दुनियाभर में 10 हेक्टेयर से बड़ी 5.9 फीसदी झीलें ऐसी हैं, जो शैवालों के बढ़ने का जोखिम झेल रही हैं। इनमें 3,043 झील भारत में हैं। धरती पर 14 लाख से अधिक झीलें ऐसी हैं, जो आकार में 10 हेक्टेयर या उससे ज़्यादा बड़ी हैं। ये झीलें इंसानों की तरह सेहत संबंधित समस्याओं से जूझ रही हैं और बीमार पड़ रही हैं।

जर्नल अर्थ फ्यूचर में झीलों के स्वास्थ्य को लेकर प्रकाशित एक शोध में कहा गया है कि इन समस्याओं को रोकने और इलाज के लिए हमें मानव स्वास्थ्य देखभाल में उपयोग की जाने वाली रणनीतियों की आवश्यकता है। इनमें समस्याएं उत्पन्न होने से पहले कार्रवाई करना, नियमित जांच करना और स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर तक उचित पैमाने पर समाधान लागू करना शामिल है। शोधकर्ताओं के मुताबिक, दुनिया की 12 फीसदी से अधिक आबादी इन झीलों के तीन किमी के दायरे में बसी हैं। ये झीलें न केवल पानी की ज़रूरतों को पूरा करती हैं, बल्कि पारिस्थितिकी तंत्र संबंधी आवश्यक सेवाएं प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। झीलें भी इन्सानों की तरह ही जीवित प्रणालियां हैं। इन्हें ऑक्सीजन, साफ पानी और संतुलित ऊर्जा के साथ-साथ पोषकतत्त्वों की आवश्यकता है। ऐसा न होने पर इनमें सांस और प्रवाह से जुड़ी समस्याएं, पोषकतत्त्वों में असंतुलन, तापमान, विषाक्तता और संक्रमण जैसी दिक्कतें आ रही हैं।

अध्ययन में शोधकर्ताओं ने लेकएटलस नामक डाटाबेस का उपयोग किया है। इसमें से उन्होंने 14,27,688 झीलों के आंकड़ों का विश्लेषण किया है।

अध्ययन के अनुसार, जहां झीलों के आसपास की 75 फीसदी से अधिक ज़मीन का उपयोग खेती के लिए किया जा रहा है, वहां झीलों में बढ़ते प्रदूषण की वजह से हानिकारक शैवालों के बढ़ने का जोखिम बेहद ज़्यादा है।

सिकुड़ रही हैं कश्मीर घाटी की झीलें

रिपोर्ट के अनुसार, जहां डल झील के आकार में 25 फीसदी तक की गिरावट आई है, वहीं वुलर झील का जल क्षेत्र भी एक चौथाई सिकुड़ गया है। कश्मीर घाटी में मौजूद झीलें पिछले कुछ वर्षों में तेजी से सिकुड़ रहीं हैं। साथ ही इन झीलों में मौजूद पानी की गुणवत्ता भी तेजी से गिर रही है। यह जानकारी नासा अर्थ ऑब्जर्वेटरी की ओर से साझा की गई रिपोर्ट में सामने आई है।

एक पॉलिसी में सभी घरवालों को बीमा कवर का फायदा

नई दिल्ली। बीमा नियामक इरडा ने बीमा कंपनियों को कॉम्बो पॉलिसी लाने की मंजूरी दी है। इससे एक पॉलिसी में सभी घरवालों को बीमा कवर का फायदा मिलेगा। इरडा ने हैदराबाद में इस पॉलिसी पर बीमा कंपनियों के साथ मंथन किया। इसे 'बीमा विस्तार' पॉलिसी नाम दिया है। इसका प्रीमियम 1500 रुपए प्रति पॉलिसी रखने का प्रस्ताव रखा गया है। 'बीमा विस्तार' का मकसद गांवों सहित देश की ज़्यादा से ज़्यादा आबादी तक बीमा मुहैया कराना है।

हैदराबाद में इरडा चीफ देबाशीष पंडा की अध्यक्षता में हुई बैठक में 'बीमा विस्तार' की जानकारी दी गई। उन्होंने बताया, बीमा विस्तार में 820 रुपए के प्रीमियम के साथ जीवन कवर, 500 रुपए पर स्वास्थ्य कवर, 100 रुपए पर व्यक्तिगत दुर्घटना कवर और 80 रुपए पर संपत्ति कवर शामिल है। यदि पूरे परिवार के लिए फ्लोटर आधार पर लेने पर पॉलिसी की लागत 2,420 रुपए होगी। परिवार के बाकी सदस्यों के लिए अतिरिक्त 900 रुपए का शुल्क लिया जाएगा। उन्होंने बताया कि जीवन, व्यक्तिगत दुर्घटना और संपत्ति कवर प्रत्येक के लिए बीमा राशि दो लाख रुपए होगी। स्वास्थ्य कवर में 10 दिन के लिए 500 रुपए की बीमा राशि प्रदान की जाएगी, जो अधिकतम 5,000 रुपए हो सकती है। यह राशि बिना बिल दिखाए दी जा सकेगी।

नैनीताल उत्तराखंड राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग ने कहा है कि बीमा पॉलिसी जारी करने के बाद किसी हादसे के लिए बीमा कंपनी को भुगतान करना होगा। दुर्घटना मामले में 90 दिन कवरेज नहीं करने की नीति ठीक नहीं है। अयोग अध्यक्ष कुमकुम रानी और सदस्य बी.एस. मनराल ने दुर्घटना के मामले में कंपनी को 6,23,896 रुपए का ब्याज सहित भुगतान करने के निर्देश दिए। मनोज कुमार पंत ने बिड़ला सन लाइफ इंश्योरेंस कंपनी से पॉलिसी खरीदी थी। कंपनी ने आकस्मिक मृत्यु, विकलांगता, गंभीर बीमारी, शल्य चिकित्सा पर भुगतान का भरोसा दिया था। हादसे की चपेट में आने पर इलाज पर खर्च किए 6,23,896 मांगे, पर कंपनी ने कहा, पॉलिसी जारी किए 90 दिन नहीं हुए हैं। भुगतान नहीं किया जा सकता।

एंटीबायोटिक दवाओं के दुरुपयोग से बढ़ा बैक्टीरियल इन्फेक्शन का ख़तरा

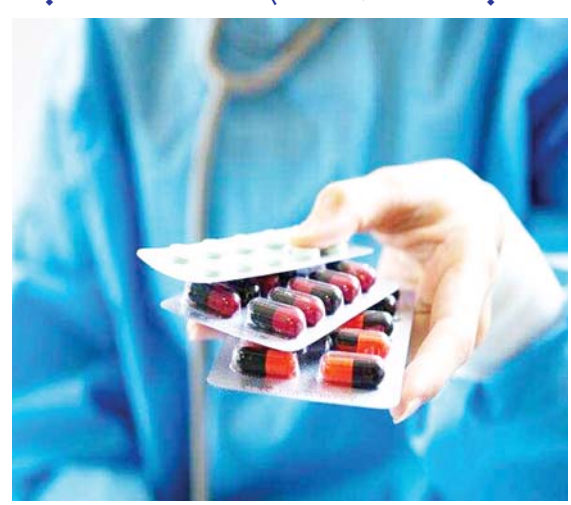

नई दिल्ली। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) का कहना है कि कोरोना के दौरान इलाज में एंटीबायोटिक दवाओं का भारी दुरुपयोग किया गया। इससे मरीजों की स्थिति में कोई खास सुधार तो नहीं हुआ, लेकिन रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) के मूक प्रसार और उससे जुड़े ख़तरे ज़रूर बढ़ गए हैं।

रोगाणुरोधी प्रतिरोध एक ऐसी स्थिति है, जिसमें एंटीबायोटिक दवाएं कई तरह के संक्रमण को रोकने में बेअसर साबित होती हैं। डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट के अनुसार, कोरोना की वजह से अस्पताल में भर्ती मरीजों में से महज आठ फीसदी को बैक्टीरिया के कारण होने वाला संक्रमण था। इस संक्रमण का इलाज एंटीबायोटिक दवाओं से मुमकिन है, मगर इसके बावजूद कोरोना के हर चार में से तीन मरीज यानी 75 फीसदी को सिर्फ इस उम्मीद में एंटीबायोटिक दवाएं दी गईं कि शायद वो फायदेमंद होंगी।

डब्ल्यूएचओ के मुताबिक, कोरोना से पीड़ित मरीजों में एंटीबायोटिक दवाओं के इस्तेमाल से स्थिति में कोई सुधार तो नहीं आया, लेकिन उन लोगों में जिन्हें बैक्टीरियल इन्फेक्शन नहीं था, उन्हें इन दवाओं से नुक़सान ज़रूर हुआ है। यह निष्कर्ष विश्व स्वास्थ्य संगठन की ओर से कोविड-19 के लिए बनाए वैश्विक प्लेटफार्म से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण पर आधारित हैं। यह आंकड़े जनवरी 2020 से मार्च 2023 के बीच 65 देशों में साढ़े चार लाख मरीजों से हासिल किए गए थे।

स्वत्वाधिकारी त्रिशक्ति प्रोडक्ट्स प्रा. लि. के लिए सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक पूजा शुक्ला के द्वारा हितकारिणी प्रिन्टिंग प्रेस, सिविक सेंटर, जिला-जबलपुर (म.प्र.) से मुद्रित तथा पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम, पोस्ट-मऊ, तहसील-ब्यौहारी, जिला-शहडोल (म.प्र.) से प्रकाशित। सम्पर्क सूत्र: 9981657948, 9179465414, email-sankalpshakti09@gmail.com, RNI NO-MPHIN/2009/31042, न्यायालयीन क्षेत्राधिकार ब्यौहारी।